# भारत में नगरीयकरण
# (URBANIZATION IN INDIA)

**नगरीयकरण का विकास**– भारत में नगरीयकरण अन्य विकासशील देशों के समान ही विस्फोटक स्थिति में है और यहाँ स्वतंत्रता के बाद नगरीय जनसंख्या एवं नगरों की संख्या में तीव्र वृद्धि हुई हैं, जिसका मुख्य कारण विकर्षण शक्तियाँ है अर्थात ग्रामीण नगरीय स्थानांतरण नगरीय विस्फोट का मुख्य कारण है। वर्तमान में 2001 की जनगणना के अनुसार 27.78% नगरीयकरण पाया जाता है। अर्थात देश का 27.78% जनसंख्या परिभाषित नगरों में अधिवास करती हैं। सामान्यतः नगरीयकरण कृषि–सामाजिक व्यवस्था से औद्योगिक सामाजिक व्यवस्था की ओर अग्रसर होने की प्रक्रिया है, जिसमें नगरीय जनसंख्या में वृद्धि के साथ ही नगरों की संख्या में वृद्धि होती हैं।

भारत में जनसंख्या वृद्धि दर पिछले दशक में 21.34% था जिसकी तुलना में नगरीय जनसंख्या में वृद्धि 31.40% हुआ। 1991 में 21.72 करोड़ लोग नगरों में रहते थे। जो 2001 में 28.54 करोड़ से गया।

भारत में नगरीयकरण की तीन अवस्थाएं हैं–

(i) **1901 – 1931 के बीच मंद गति से वृद्धि का काल**, जिसका कारण बीमारी, आकाल से होने वाली मृत्यु थी। 1931 में मात्र 12.13% ही नगरीयकरण हो पाया।

(ii) **1931–1961 के मध्य का मध्यम वृद्धि का काल** रहा। 1961 में नगरीयकरण 18% हो गया। इस वृद्धि का प्रारंभिक कारण भारत का विभाजन और पाकिस्तान से आने वाली जनसंख्या का नगरों में बसना था। दूसरा कारण आर्थिक विकास प्रक्रिया का प्रारंभ होना था।

(iii) **1961–2001 में तीव्र वृद्धि का काल** रहा और नगरीयकरण 27.78% हो गया। 1901 से 1961 के बीच 5.31 करोड़ नगरीय जनसंख्या में वृद्धि हुई। पुनः 1961–2001 के 40 सालों में 20.66 करोड़ की वृद्धि हुई। जिसके मुख्य कारणों में औद्योगिकरण, औद्योगिक एवं व्यापारिक केन्द्रों की स्थापना, भिन्न–भिन्न उद्देश्यों के लिए नए–नए नगरों की स्थापना। कई ग्रामीण क्षेत्र का नगर में परिवर्तन एवं तीव्र जनसंख्या विस्फोट का उत्पन्न होना हैं।

भारत में नगरीकरण की स्थिति को निम्न सारणी में देखा जा सकता हैं

| वर्ष | नगरीय जनसंख्या (करोड़) | दशक वृद्धि (%) | नगरीयकरण% |
|---|---|---|---|
| 1901 | 2.51 | – | 10.01 |
| 1911 | 2.66 | 2.4 | 10.57 |
| 1921 | 2.86 | 7.3 | 11.38 |
| 1931 | 3.38 | 18.4 | 12.13 |
| 1941 | 4.43 | 31.1 | 13.91 |
| 1951 | 6.26 | 41.1 | 17.34 |
| 1981 | 15.62 | 46.14 | 23.34 |
| 1991 | 21.72 | 36.19 | 25.72 |
| 2001 | 28.54 | 31.40 | 27.78 |

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 1951 के बाद नगरीय जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई हैं। इसके पहले अत्यंत धीमी गति से नगरीयकरण हुआ है। **सर्वाधिक वृद्धि 1971–81 के दशक में हुआ** जिसका मुख्य कारण पंजाब, हरियाणा जैसे क्षेत्र से बड़ी संख्या में नगर की ओर स्थानांतरण था।

दूसरा 1941–51 के बीच रहा। भारत पाकिस्तान का बंटवारा मुख्य कारण था।

1981 से 1991 के बीच ग्रामीण–नगरीय स्थानांतरण में थोड़ी कमी आई, जिसका कारण हरित क्रांति का प्रसार एवं दुग्ध क्रांति के प्रभाव से ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार की उपलब्धता थी।

1991–2001 के मध्य नगरीयकरण के वृद्धि दर में कमी आई है, जिसका एक प्रमुख कारण ग्रामीण विकास कार्यक्रमों का प्रारंभ होना और ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के अवसर में वृद्धि होना हैं।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि भारत में नगरीयकरण में उत्तार–चढ़ाव की प्रवृति रही हैं। वर्तमान में नगरीय वृद्धि दर में कमी आई है। इसके बावजूद कार्यिक वृद्धि दर 3% से अधिक है जो कि नगरीय जनसंख्या विस्फोट को बताता है।

इसके अतिरिक्त भारत में नगरों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई हैं। वर्तमान में नगरों की कुल संख्या 5151 हैं।

जबकि 1991 में नगरों की कुल संख्या 3609 थी। भारत में नगरों की संख्या को निम्न सारणी में देखा जा सकता हैं।

## भारत में नगरों की संख्या

| | I | II | III | IV | V | VI | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1901 | 24 | 42 | 135 | 393 | 750 | 490 | 1834 |
| 1951 | 74 | 95 | 330 | 621 | 1146 | 578 | 2849 |
| 1991 | 296 | 341 | 927 | 1135 | 725 | 185 | 3609 |
| 2001 | 426 | 505 | 1384 | 1553 | 1056 | 227 | 5151 |

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि प्रथम पद तथा दूसरे वर्ग के नगरों की संख्या में सबसे अधिक वृद्धि हुई हैं। तीसरे तथा चौथे पद के नगरों की संख्या में सामान्य गति से वृद्धि हुई है, जबकि V तथा VI में 1991 में कमी आ गई है। यह कमी VI वर्ग के नगर में सर्वाधिक थी। पुनः 2001 में इसकी संख्या में वृद्धि हुई। लेकिन अभी भी VI वर्ग की संख्या 1901 की तुलना में 2001 (227) में कम हैं। इसके साथ ही भारतीय नगरों में जनसंख्या वितरण में भी पर्याप्त विषमता पाई जाती है। देश का 65% नगरीय जनसंख्या अभी भी प्रथम पद के नगर में अधिवासित हैं। भारत में नगरीयकरण की एक मुख्य प्रवृति नगरों की संख्या मे तेजी से वृद्धि होना हैं। 1901 में 1834 नगर थे, जो 2001 में 5151 हो गया। इसके अतिरिक्त 10लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों की संख्या में तीव्र वृद्धि हुई हैं। 1901 में केवल एक महानगर था, वर्तमान में 35 हो गया। भारत के महानगरों की संख्या एवं अधिवासित जनसंख्या को निम्न सारणी से जाना जा सकता हैं।

| वर्ष | महानगर | जनसंख्या मिलियन में | नगरीय जनसंख्या का % |
|---|---|---|---|
| 1901 | 1 | 1.51 | 5.84% |
| 1951 | 5 | 11.57 | 18.81% |
| 1991 | 23 | 70.66 | 32.54% |
| 2001 | 35 | 107.88 | 37.80% |

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि **35 बड़े महानगरों में ही नगरीय जनसंख्या का 37.80% अधिवास करती हैं।** यह स्थिति नगरीय विस्फोट की स्थिति हैं।

इस तरह भारत में नगरीय जनसंख्या में विस्फोट की प्रवृति पाई जाती है, लेकिन विकसित देशों की तुलना में यहाँ अल्प नगरीकरण हुआ हैं। विभिन्न विकसित देशों में जहाँ 60% से अधिक नगरीकरण पाई जाती हैं, उसकी तुलना में भारत में अत्यंत कम 27.78% नगरीय जनसंख्या पाई जाती हैं। भारत नगरीय विकास की प्रारंभिक अवस्था में हैं।

इसके अतिरिक्त देश में नगरीयकरण में प्रादेशिक असमानता भी पाई जाती हैं। संघ राज्य क्षेत्र में चंड़ीगढ़ एवं दिल्ली में नगरीयकरण 90% से अधिक है, जबकि दादर–नागर हवेली में 10% से कम हैं। विभिन्न राज्यों में नगरीयकरण के अनुसार 30% से अधिक नगरीय जनसंख्या रखने वाले राज्य क्रम से हैं– गोवा, मिजोरम, तमिलनाडू, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक एवं पंजाब हैं।

न्यूनतम नगर जनसख्या वाले राज्यों में– हिमाचल प्रदेश, बिहार, सिक्किम, असम एवं उड़ीसा हैं, जहाँ 15% से कम नगरीय जनसंख्या पाई जाती हैं।

शेष राज्यों में 15–30% के बीच नगरीयकरण हुआ हैं।

इस तरह नगरीयकरण में भी व्यापक प्रादेशिक असमानता पाई जाती हैं। देश की कुल नगरीय जनसंख्या का सर्वाधिक % रखने वाला राज्य क्रमशः महाराष्ट्र (14.37), उत्तर प्रदेश (12.09), तमिलनाडू (9.55), प0 बंगाल (7.88), आंध्र प्रदेश (7.18), गुजरात (6.62), कर्नाटक (6.28), मध्य प्रदेश (5,64), हैं। जहाँ 5% से अधिक नगरीय जनसंख्या पाई जाती है। इसकी तुलना में पूर्वोत्तर एवं पर्वतीय राज्यों में देश की कुल जनसंख्या का 1% से भी कम नगरीय जनसंख्या का पाई जाती है। इनमें – सिक्किम (0.02), अरूणाचल प्रदेश (0.08), नागालैण्ड (0.12), मिजोरम, मेधालय, त्रिपुरा, मणिपुर, हिमाचल प्रदेश, गोवा (0.23), उत्तराखण्ड एवं जम्मु–कश्मीर राज्यों में 1% से भी कम नगरीय जनसंख्या अधिवासित हैं। शेष राज्यों में 1 से 5% के मध्य नगरीय जनसंख्या निवास करती हैं। इस तरह विभिन्न राज्यों में नगरीय जनसंख्या में पर्याप्त विभिन्नता पाई जाती हैं।

उपरोक्त नगरीयकरण की विशेषताओं से यह स्पष्ट होता हैं कि भारत में अन्य विकासशील देशों के समान ही एक ओर नगरीय जनसंख्या विस्फोट की समस्या पाई जाती है, वहीं नगरीयकरण में प्रादेशिक विषमता एवं अल्प नगरीयकरण की समस्या भी विद्यमान हैं।